गीता का निष्काम कर्म योग की व्याख्या करें।

Ans- अनासक्त कर्मयोग या निष्काम कर्म गीता का मौलिक तथा नैतिक उपदेश है। गीता का प्रारंभ होता है एक समस्या को लेकर और वह समस्या है कि अर्जुन अपनापन के कारण युद्ध करना नहीं चाहता है। अतः गीता किंकर्तव्य विमूढ़ अर्जुन को स्वधर्म पालन हेतु उपदेश देती है और अर्जुन युद्ध करने के लिए तत्पर हो जाता है। इस प्रकार कर्म या स्वधर्म गीता का मौलिक उपदेश है। निष्काम शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के निः + काम से हुई है, जिसका अर्थ है बिना फल के तथा कर्म का अर्थ है क्रियाशील होना। अतः शाब्दिक व्युत्पत्ति की दृष्टि से निष्काम कर्म का अर्थ है कि कर्ता को बिना फल या परिणाम की कामना के क्रियाशील होना। निष्काम शब्द का विपरीत सकाम है, जिसका अर्थ है फल प्राप्ति की कामना के साथ कर्म करना। निष्काम कर्म गीता का मुख्य विषय है।

गीता के अनुसार मनुष्य को स्वधर्म का पालन करना चाहिए, जिससे वह अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य तक पहुँचाने में समर्थ हो सके। गीता संसार में मनुष्य को सक्रिय जीवन व्यतीत करने का उपदेश देती है, किन्तु उसका आन्तरिक जीवन परमात्मा के साथ जुड़ा हुआ रहे। भगवान कृष्ण गीता में अर्जुन को कर्म की समस्या को आध्यात्मिक दृढ़ता की ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि

(5) कि — "गहना कर्मणो गतिः" अर्थात कर्म की गति गहन है। इसलिए कर्म से बचना संभव नहीं है। अर्जुन अज्ञानता के कारण युद्ध करना नहीं चाहता है। भगवान कृष्ण अर्जुन को स्वधर्म या निष्काम भाव से कर्म करने का उपदेश देते हैं और अर्जुन युद्ध करने के लिए तत्पर हो जाता है। कृष्ण ने कहा है "कर्म में ही तेरा अधिकार है, फल में कभी नहीं तुम कर्म-फल का हेतु भी मत बनो, अकर्मण्यता से तुम्हारी आसक्ति न हो"। गीता का निष्काम कर्म कर्मों के त्याग के स्थान पर कर्म-फल त्याग का उपदेश देती है। गीता कर्म फल त्यागने की आवश्यकता कहती है, परन्तु इसका उद्देश्य कर्म से सन्यास नहीं है जो कर्म-फल को छोड़ देता है, वही वास्तविक त्यागी है। गीता में कहा गया है :—

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि"॥

मनुष्य की कर्म प्रवृत्ति तथा फल निवृत्ति होना चाहिए। अर्थात मनुष्य को कर्म करना चाहिए, फल के बारे में नहीं सोचना चाहिए। गीता हमें पूर्णतः सक्रिय जीवन व्यतीत करने का आदेश देती है। गीता के निष्काम कर्मयोग की तुलना प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक Kant के "Duty for the sake of Duty" के साथ की जा सकती है। Kant ने भी यह कहा है कि मनुष्य को कर्तव्य करते समय कर्तव्य के लिए तत्पर रहना चाहिए। कर्तव्य करते समय फल की आशा का भाव छोड़ देना चाहिए। अतः निष्काम कर्मयोग या अनासक्त कर्म गीता का मुख्य विषय है।

By
Dr. K.B. Prasad
Phil Deptt
R.K.D. College